है कि श्रीकृष्ण की क्रियायें दूसरों से बिलकुल अलग हैं। श्रीकृष्ण के आदेश का पालन करना सर्वोत्तम नीति है क्योंकि इससे जीवन पूर्णतया कृतार्थ और सार्थक हो जाता है। शास्त्रों के अनुसार ऐसा कोई नहीं है, जो श्रीकृष्ण का स्वामी हो; सभी उनके सेवक हैं। एकमात्र श्रीकृष्ण ईश्वर हैं, और सब उनके भृत्य हैं। प्राणीमात्र उनका आज्ञानुगामी है; उनकी अवज्ञा करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है। उनके आधीन होने से जीवमात्र उनके मार्गदर्शन के अनुसार क्रिया कर रहा है। 'ब्रह्मसंहिता' के अनुसार, श्रीकृष्ण सब कारणों के परम कारण हैं।

तस्मात्प्रणम्य प्रणिधाय कायं
प्रसादये त्वामहमीशमीड्यम्।
पितेव पुत्रस्य सखेव सख्युः
प्रियः प्रियायार्हसि देव सोढुम्।।४४।।

तस्मात्=इसलिए; **प्रणम्य**=प्रणाम करके; **प्रणिधाय**=(आपके) चरणों में रखकर; **कायम्**=शरीर को; **प्रसादये**=कृपा की याचना करता हूँ; **त्वाम्**=आप; **अहम्**=मैं; **ईशम्**=ईश्वर को; **ईड्यम्**=स्तुति के योग्य; **पिता इव**=पिता जैसे; **पुत्रस्य**=पुत्र का; **सखा इव**=सखा जैसे; **सख्युः**=सखा का; **प्रियः**=प्रेमी जैसे; **प्रियायाः**=प्रियतम का (अपराध क्षमा करता है, वैसे ही) **अर्हसि**=योग्य हैं; **देव**=हे देव; **सोढुम्**=सहने को।

अनुवाद

प्रभो! आप प्राणीमात्र के आराध्य परमेश्वर हैं। इस कारण हे नाथ! मैं आपके चरणों में गिरकर और प्रणाम करके आपकी कृपा की याचना करता हूँ। मेरे अपराधों को क्षमा करके मुझ पर उसी भाँति प्रसन्न हो जाइये, जैसे पिता पुत्र के, सखा सखा के और प्रेमी अपने प्रियतम के अपराध को सहन करता है।।४४।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण के भक्त उनसे विविध प्रकार के सम्बन्ध रखते हैं। कोई उन्हें अपना पुत्र मानता है, कोई पति, तो कोई सखा, स्वामी आदि रूपों में उन्हें अपना मानता है। जैसे पिता पुत्र के, पति पत्नी के और स्वामी सेवक के अपराध सहता है, वैसे श्रीकृष्ण भी भक्त के अपराधों को सहन करते हैं।

अदृष्टपूर्वं हृषितोऽस्मि दृष्ट्वा
भयेन च प्रव्यथितं मनो मे।
तदेव मे दर्शय देव रूपं
प्रसीद देवेश जगन्निवास।।४५।।

अदृष्टपूर्वम्=पहले न देखे गये आपके इस अद्भुत रूप को; **हृषितः अस्मि**=हर्षित हो रहा हूँ; **दृष्ट्वा**=देखकर; **भयेन**=भय से; **च**=भी; **प्रव्यथितम्**=अति आकुल हो रहा है; **मनः**=मन; **मे**=मेरा; **तत् एव**=वही; **मे**=मेरे को; **दर्शय**=दिखाइये;